उत्तराखण्ड राज्य बाल कल्याण परिषद् के 'मिलकर रहना सीखो शिविर' में माननीय राज्यपाल महोदय का संबोधन

(22 दिसम्बर 2022)

जय हिन्द!

राजभवन के प्रांगण में आप सभी बच्चों को देखकर आज मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है।

उत्तराखण्ड के अलग– अलग जनपदों के दूरदराज के स्थानों से आकर आप **'मिलजुलकर रहना सीखो शिविर'** में हिस्सा ले रहे हैं, मिल जुलकर सीख रहे हैं, मिलजुलकर रहना सीख रहे हैं।

मुझे पूरा यकीन है कि आप सभी इस शिविर में **कुछ अच्छा सीखेंगें।**

आप सबको यह जानकर अच्छा लगेगा कि **जितना हम अपने शिक्षकों से सीखते हैं उतना ही हम अपने साथियों से भी सीखते हैं।**

और जब साथी भी नये – नये हों, अलग – अलग जगह से आये हों तब तो सीखने का मजा ही कुछ और होता है।

हम नयी – नयी बातें सीखते हैं, हम नये – नये हुनर सीखते हैं। नये खेल, नयी गतिविधियां, नये अनुभव और नये तजुर्बे होते हैं।

क्योंकि हमारे नये – नये साथियों में से कोई बहुत अच्छा गाना जानता है, कोई बहुत अच्छा नृत्य जानता है, कोई संगीत, कोई चित्रकारी तो कोई घुड़सवारी।

कहने का मतलब है कि हर **एक बच्चे में अलग–अलग प्रतिभा होती है।** जो जितनी ज्यादा चीजें सीखता है, वह उतना ही प्रतिभाशाली कहलाता है।

जब हमारे बच्चे प्रतिभाशाली होते हैं तो वे हमारे देश और समाज के लिए भी बहुत उपयोगी होते हैं। वे अपने माता–पिता का नाम रौशन

करते हैं। अपने गांव का, समाज का, प्रदेश और देश का नाम भी रौशन करते हैं।

इस लिए हम अपने शिक्षकों से तो अच्छी बातें सीखनी ही हैं, साथ ही हमें अपने साथियों से भी अच्छी – अच्छी बातें जरूर सीखनी चाहिए।

'मिलकर रहना सीखो' शिविर का मकसद भी यही है कि हमारे बच्चे अच्छी – अच्छी बातें सीखें। एक साथ रहें। मिल–जुलकर रहें।

हमारा देश बहुत विशाल है। हमारे देश का लोकतंत्र दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। यहां थोड़ी– थोड़ी दूरी पर बहुत कुछ बदल जाता है।

आपने देखा होगा, हर जिले के बच्चों में कुछ अलग विशेषताएं हैं। वेशभूषा, भाषा–बोलियां, रहन–सहन, खान–पान, रीति–रिवाज, लोकजीवन सब में कुछ न कुछ भिन्नता होती है।

मुझे बताया गया है कि आप में कुछ तो पहली बार घर से बाहर आएं हैं। आपमें से बहुतों ने पहली बार देहरादून देखा है। और आपने पहली बार 'मिलकर रहना सीखो शिविर' में भाग लिया है।

मुझे बताया गया है कि यहां आप सभी ने बहुत सी नयी नयी बाते सीखी हैं। डायरी लिखना, खेलकूद, अचार – मुरब्बा बनाना भी आपने शिविर में सीखा है।

मुझे बताया गया कि इस शिविर में प्रदेश भर से आये हुए बच्चे अपनी रीति–रिवाज एंव लोक संस्कृति का आदान–प्रदान कर स्थानीय बोली–भाषा को भी एक दूसरे से सीखते हैं।

शिविर के दौरान बच्चों को विद्वान व्यक्तियों के व्याख्यान करावाए जाते हैं मुझे पूर्ण विश्वास है कि इससे बच्चों को विभिन्न क्षेत्रों का अच्छा ज्ञान प्राप्त हुआ होगा और उन्ही भावी जीवन के लिए प्रेरणा मिली होगी।

सच में यह एक बहुत ही सुन्दर पहल है, जहां हम मिलकर रहने की सीख पाते हैं।

आज मैने देखा कि किस प्रकार से आपने दैनिक डायरी तैयार की हुई है, आपके के सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति बहुत अच्छी थी, आज बहुत से बच्चों ने पुरस्कार प्राप्त किये । सभी बच्चों को बहुत बधाई देता हूँ।

जो शिक्षक इन बच्चों को अपने साथ लेकर आये हैं, मैं आपको शाबासी देता हूँ, आपके कार्य की प्रसंशा करता हूँ, आप बच्चों की जिम्मेवारी को समझ रहे हैं। ये एक बड़ी जिम्मेदारी होती है। बच्चों के स्वास्थ्य, खान–पान, सुरक्षा सभी आप जिम्मेदारी के साथ निभाते हैं।

आप सभी बच्चों से मैं यह भी कहना चाहूंगा कि जब आप यहां से वापस अपने विद्यालय में जाएंगे तो अपने साथियों तथा अपने माता–पिता, भाई–बहनों, दोस्तों से अपने शिविर के अनुभव साझा करें ताकि उनके साथियों को भी शिविर के सम्बन्ध में जानकारी मिल सके और वे आपके अनुभवों से सीखें।

मैं आप सभी बच्चों के भावी जीवन की सफलता की कामना करता हूँ मुझे खुशी है कि **'बाल कल्याण परिषद्'** बहुत अच्छा कार्य कर रहा है। बाल कल्याण परिषद् की महासचिव श्रीमती पुष्पा मानस जी और सभी पदाधिकारी गण, सदस्य गण बच्चों के विकास के लिए उनके कल्याण के लिए बहुत अच्छी पहल कर रहे हैं।

मैं आप सभी को इस सुन्दर कार्यक्रम के आयोजन के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ। शुभकामनाएं देता हूँ।

जय हिन्द!